# मैं सबसे छोटी होऊँ

**पाठ का सार / प्रतिपाद्य -**

प्रस्तुत पाठ 'मैं सबसे छोटी होऊँ' के लेखक 'सुमित्रानंदन पंत' जी हैं। छोटे बच्चों में प्रायः अपने माँ के स्नेह के प्रति असुरक्षा की भावना होती है। यहाँ पर भी बच्चों के इसी मनःस्थिति का वर्णन किया गया है। बच्ची अपनी माँ से कहती है कि वह छोटी ही रहना चाहती है। अगर वह बड़ी हो जाएगी तो माँ उस पर अधिक ध्यान नहीं देगी। उसे माँ का स्नेह नहीं मिल पाएगा। छोटी बनकर वह अपनी माँ की गोदी में सोना चाहती है। जिस प्रकार छोटे बच्चे अपनी माँ का हाथ पकड़ें रहते हैं, बच्ची की भी यही इच्छा होती है। बच्ची के अनुसार यदि वह बड़ी हो जाएगी तो अपनी माँ के साथ अधिक समय तक नहीं रह पाएगी। बड़े होने के बाद माँ हमें अपने हाथों से नहीं खिलाती न ही अपने हाथ से हमारा बाकी काम करती है। बड़ा होने के बाद वह हमारे साथ छल (धोखा) करती है। वह सदा हमारे साथ नहीं रहती। इसलिए बच्ची हमेशा छोटी ही रहना चाहती है।

**कविता की भाषा शैली -**

(1) कविता की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है।

(2) 'पकड़-पकड़' में एक ही शब्द की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(3) **'बड़ा बनाकर', 'निस्पृह निर्भय' , 'दिखा दे'** में एक ही वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

**पाठ का उद्देश्य -**

एक छोटे बच्चे की मनोदशा को प्रस्तुत करना ही पाठ का उद्देश्य है। बच्चे की यही इच्छा होती है कि वह हमेशा अपनी माँ के साथ रहे।

**पाठ का संदेश -**

पाठ के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि बच्चे के लिए उसकी माँ का साथ सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। अपनी माँ के साथ बच्चा सबसे अधिक सुरक्षित महसूस करता है।